पाठ - 2
इन्सानो की पैदाइश का इतिहास

الدرس الثاني - هندي
قصة الخلق

इसाना का पदाइश का शुरूआत अबुल बशर आदम अलैहिस्सलाम से हुइ ह, अल्लाह न उन्ह ामट्टा स पदा किया, उनमें रूह फूंकी, उन्हें बहुत सारी चीज़ों के नाम सिखाए और उनके आदर सम्मान में बढ़ौतरी की, फिर फ़रिश्तों को आदेश दिया कि वे आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें अतः इब्लीस के अलावा सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। इब्लीस ने सज्दा करने से इनकार कर दिया और आदम अलैहिस्सलाम से बैर करते हुए उसने घमंड का रास्ता अपनाया, अतएव अल्लाह ने उसे आसमान से उतार दिया और अपमानित करके जन्नत से निकाल दिया और उसके हक़ में फटकार, दुर्भाग्य और जहन्नम की आग लिख दी

तब इबलीस ने अल्लाह से मुहलत मागी कि वह आदम की सन्तान को गुमराह करेगा, और उनको सीधे रास्ते से फेर देगा। इसके बाद अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम से उनकी बीवी हव्वा को पैदा किया ताकि वे उनसे सुख हासिल करें और उनको जानें पहचानें। अल्लाह ने इन दोनों को हुक्म दिया कि वे जन्नत में रहें जिसकी नेमतों के बारे में सोचना भी इन्सान के लिए बड़ा मुश्किल है। अल्लाह ने इन दोनों को इब्लीस की दुश्मनी से आगाह किया और आजमाइश व परीक्षा के तौर पर जन्नत के पेड़ों में से किसी पेड़ का फल खाने से मना कर दिया। लेकिन इब्लीस ने इन दोनों के दिलों में भ्रम पैदा किया और उस पेड़ का फल खाने पर उभारा और इसके लिए बहुत सारी क़समें खा कर उन को विष्वास दिलाया कि वह उनका भला चाहने वाला है इब्लीस ने कहा कि यदि तुम दोनों इस पेड़ का फल खा लोगे तो तुम सदैव जिन्दा रहोगे, इब्लीस निरंतर आदम व हव्वा अलैहि के पीछे लगा रहा यहां तक कि इन दोनों को गुमराह कर दिया। दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया और अपने दाता की नाफ़रमानी कर दी। बाद में इन्हें अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ और उन्होंने अपने दाता के दरबार में तौबा की तो अल्लाह ने इनकी तौबा स्वीकार कर ली लेकिन इन दोनों को जन्नत से जमीन पर उतार दिया। अल्लाह ने आदम व उनकी बीवी को ज़मीन पर बसाया और उन्हें ढेर सारी औलाद से नवाज़ा जो पूरी दुनिया में फैल गई। इब्लीस और उसके चेले आदम की औलाद के साथ बराबर टकराते रहे ताकि उनको हिदायत से बाज़ रख सके, भलाई से दूर रख सके, उनके सामने बुराइयों को सजा कर पेश कर सके और उन चीज़ों से दूर रख सके जो अल्लाह की रज़ामन्दी का ज़रिया बनती हैं ताकि वे आखिरत में जहन्नम में दाखिल हो सकें।

जब आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो गयी तो उनके बाद उनकी सन्तान ने दस सदी तक अल्लाह की पैरवी की और एक अल्लाह को मानते हुए जीवन गुजारा। इसके बाद उनमें शिर्क घुस आया, अल्लाह के साथ दूसरे की भी उपासना की जाने लगी, लोगों ने बुतों को पूजना शुरू कर दिया तो अल्लाह ने अपने पहले रसूल नूह अलैहिस्सलाम को भेजा जिन्हों ने लोगों को अल्लाह की इबादत करने और बुतों से अलग रहने की दावत दी।

नूह अलैहिस्सलाम के बाद नबियों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। सारे ही नबियों ने इस्लाम यानी अल्लाह की इबादत करने और उसके अलावा पूजी जाने वाली दूसरी चीज़ों को छोड़ने का हुक्म दिया इसके बाद इबराहीम अलैहिस्सलाम आए। उन्हों ने भी अपनी क़ौम को बुतों की इबादत छोड़ने और केवल एक अल्लाह की इबादत करने की दावत दी। इनके बाद इनके बेटे इसमाइल और इसहाक़ अलैहिस्सलाम को नुबुवत मिली। इसके बाद इसहाक़ अलैहिस्सलाम की नस्ल में नुबुवत रही। फिर नुबुवत का सिलसिला इसमाईल अलैहिस्सलाम की नसल में चला गया। अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी नबी और रसूल के तौर पर चुना। और आपकी लायी हुई शरीअत को आखिरी शरीअत और आप पर उतारी गयी किताब कुरआन पाक को अल्लाह की ओर से भेजे जाने वाला आखिरी पैगाम बनाया।

यही वजह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत मुकम्मल व हमागीरसर्व व्यापी है इन्सान व जिन्नात, अरब व ग़ैर अरब सभी के लिए आप हैं और हर दौर व स्थान, हर क़ौम व हालात के लिए मुनासिब व बेहतर हैं। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भलाई की तमाम राहों को बता दिया है और बुराई की तमाम राहों से होशियार व ख़बरदार कर दिया है। अल्लाह तआला किसी से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीयत के अलावा दूसरी शरीयत स्वीकार नहीं करेगा।